भोपाल शहर के शासकीय एंव अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की व्यावसायिक अभिवृति का अध्ययन

डॉ प्रीति गुप्ता
रॉजीव गॉधी महाविद्यालय, भोपाल
pdgupat76@gmail.com

प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य शासकीय एंव अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति के अन्तर को ज्ञात करना था। न्यार्दश के रुप में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत 500 महिला शिक्षकों को चुना, जिनकी उम्र 25 वर्ष से 62 वर्ष तक के बीच थी। व्यवसायिक अभिवृत्ति के मापन के लिए स्वनिर्मित व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में शासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति अशासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों से उच्च पायी गई।

शिक्षा के द्वारा ही संसार की आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक प्रगति होती है। अतः शिक्षा मात्र प्रक्रिया ही नहीं अपितु राष्ट्रीय विकास व पुर्ननिर्माण की उपयोगी तकनीक है। भारत जैसे विकासशील तथा कल्याणकारी राज्य के लिये शिक्षा का भौतिक विकास के साधन के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षक और शिक्षण व्यवसाय किसी वस्तु व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा यह बहुत कुछ उस व्यक्ति से उनके प्रति बनी अभिवृत्तियों पर निर्भर करता है। व्यवहार ही नहीं व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी अभिवृत्तियों में अनुकूल ही ढलता है जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतों तथा रूचियों को ग्रहण करता हैं वे सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होती है। व्यवसायिक अभिवृत्ति शब्द दो शब्दों के योग से बना है। व्यवसाय व अभिवृत्ति

अभिवृत्ति : अभिवृत्ति शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा **'एप्टस'** से हुई है। जिसका अर्थ होता है 'योग्यता या सुविधा' है। हारवर्ट स्पेनसर ने सर्वप्रथम 1862 में पुस्तक 'फर्स्ट प्रन्सिपल' में इसकी चर्चा की है। अभिवृत्तियां व्यक्ति के उस दृष्टिकोण

की ओर संकेत करती हैं जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति संस्थान या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट की भांति व्यवहार करता है। अतः इनका उसकी अभिवृत्तियों पर प्रभाव पढता हैं। वहुत सी अभिवृत्ति उसे माता भाई बहिन अडोस पड़ोस आदि से प्राप्त होती है। इस प्रकार जन्म से ही हमारी अभिवृत्तियों का विकास होता है। प्रत्येक व्यक्ति किसी भी वस्तु विषय या घटना कें सम्बन्ध में अपना एक पृथक दृष्टिकोण रखता है इसी की अनुरूप व्यवहार करता है।

यर्स्टन (1958) – इन्होने मनोवैज्ञानिक पदार्थों से संबंधित सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की मात्रा को अभिवृत्ति की संज्ञा दी है।

1. व्यवसायिक अभिवृत्ति जन्मजात नहीं अपितु सीखी जाती है।
2. व्यवसायिक अभिवृत्ति का निश्चित अस्तित्व नहीं है अनुभव के आधार पर हम उनमें परिवर्तन या सुधार ला सकते हैं।
3. व्यवसायिक अभिवृत्ति व्यक्ति और वस्तु के संबंध को सूचित करती है क्योंकि अभिवृत्ति किसी एक विशिष्ट सीमंत उद्दीपक के संबंध है।
4. एक व्यक्ति विशेष में या तो एक उद्दीपक के प्रति अभिवृत्ति पाई जायेगी या फिर उसमें कई उद्दीपकों के प्रति अभिवृत्ति पाई जायेगी।
5. व्यवसायिक अभिवृत्ति में अभिप्रेरक प्रभावी गुण पाये जाते हैं।
6. अभिवृत्तियां विद्यालय, महाविद्यालयों में होने वाले अनुभवों में बदलती रहती है।

जगदीश (2009) ने माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष में पाया कि सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है एंव सरकारी माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में उनके व्यावसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है व निजी माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों में उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। सामान्य पुरूष एवं महिलाओं ने उनके व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अवसाना (2011) ने विश्वविद्यालयी शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया निष्कर्ष में यह पाया कि व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी का लौकिक भिन्नता पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पड़ता व सामान्य कोर्स व व्यवसायिक कोर्स का भी शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पड़ता व अनुभवों का व्यवसायिक अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर पड़ता है।

उद्देश्य

शासकीय एंव अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति के अन्तर को ज्ञात करना।

परिकल्पना

शासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों से उच्च पायी जाती है।

अध्ययन की परिसीमाएं

- भोपाल के महाविद्याालयों की 500 महिला शिक्षकों पर प्रस्तुत अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तुत अध्ययन में 250 शासकीय एंव 250 अशासकीय महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया जाएगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन भोपाल शहर के शासकीय एंव अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है । न्यादर्श के लिए भोपाल शहर के शासकीय एंव अशासकीय महाविद्यालयों से 500 महिलाओं को यादृच्छिक विधि से चुना गया। प्रस्तुत शोध में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत 500 महिला शिक्षकों को चुना, जिनकी उम्र 25 वर्ष से 62 वर्ष तक के बीच थी,

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में व्यवसायिक अभिवृत्ति के मापन के लिए स्वनिर्मित व्यवसायिक अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है।

परिणाम

शासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों से उच्च पायी जाती है।

तालिका क्र.– 1

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्रमाप विभ्रंम	टी– परीक्षण	सार्थकता (.05स्तर)
शा. शिक्षण संस्थान की महिला शिक्षक	250	56.12	4.97	.314	3.22	सार्थक
अशा. शिक्षण संस्थान की महिला शिक्षक	250	54.76	4.50	.234		

व्याख्या– उपरोक्त तालिका क्र.4.2 से स्पष्ट है कि शासकीय शिक्षण संस्थानों एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 56. 12 एवं 54.76 है। इस प्रकार शासकीय शिक्षण संस्थानों में महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

तालिका सें स्पष्ट है कि परिकलित टी–मान 3.22 है। जबकि df = 498 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर टी–परीक्षण का सारणीमान 1.96 हैं। अतः सारणीमान कम है परिकलित मान से अर्थात 3.22 > 1.96 A

शासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों में व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि शासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति अशासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों से उच्च पायी जाती है।

अतः परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत होती है ।

आरेख क्र.–1

शासकीय एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानो की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति के प्राप्त मध्यमानों का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

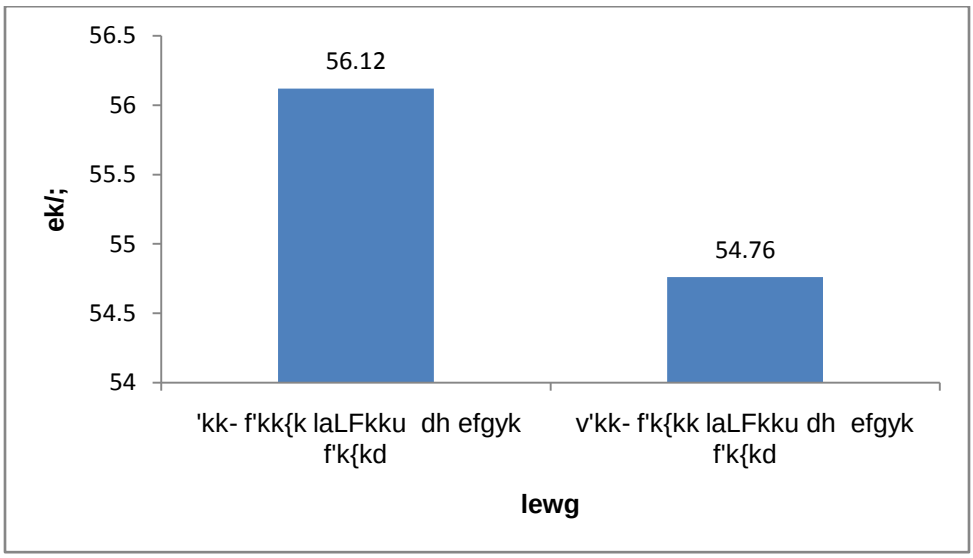

व्याख्या– उपरोक्त ग्राफ क्र. 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति के मध्यमान क्रमशः 56.12 एवं 54.76 है।

इस प्रकार शासकीय शिक्षक संस्थानों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

स्पष्ट है कि शासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति अशासकीय शिक्षण संस्थानों की महिला शिक्षकों से बेहतर पायी जाती है।

शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्ष

शासकीय एंव अशासकीय शिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की *व्यवसायिक* अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया इसका कारण शासकीय शिक्षण संस्थानों में दी जाने वाली रोजगार सुरक्षा एंव सुविधाऐं, सामाजिक परिवेश व महिला शिक्षकों का सामाजिक व आर्थिक प्रतिष्ठा के प्रति लगाव, मनुष्य में उच्च जीवनव्यापन की महात्वाकांक्षा, भौतिक सुखों की चाह एंव शहरी वातावरण यह सभी महिला शिक्षकों के शासकीय शिक्षण संस्थानों के प्रति लगाव के कारण हो सकते है।

भारतीय परिवेश में शासकीय क्षेत्रों का अत्याधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। शासकीय क्षेत्रों की नौकरियॉ सुराक्षित होती है, ऐसी भी धारणा जनसमान्य में व्याप्त है।

अशासकीय शिक्षण संस्थानों में रोजगार सुरक्षित नहीं है इससे महिला शिक्षकों का रूझान शासकीय संस्थानों के प्रति अधिक है। वेतन आयोग द्वारा वेतनमान का समय समय पर पुनःरीक्षण भी शासकीय शिक्षण संस्थानों के प्रति महिला शिक्षकों की धनात्मक अभिवृत्ति का प्रमुख कारण है ।

सुझाव

1. शिक्षण व्यवसाय में जाने से पूव *व्यवसायिक* अभिवृत्ति परीक्षण होना चाहिए ।
2. शिक्षकों के वेतनमान में सुधार की आवश्यकता है।
3. महाविद्यालय प्रशासन एंव संगठन द्वारा शिक्षक हित में कार्य किए जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अवसाना (2011): **विश्वविद्यालयी शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन,** सर्वे ऑफ ऐजूकेशन रिसर्च vol- 17 ।

गुप्ता, एस. पी. (2001): **सांख्यकीय विधियॉ व्यवहार परक विज्ञान**, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

केवट (2005): **शिक्षक एंव शिक्षिकाओं के जीवन एवं व्यवसायिक संतुष्टि का सहंसबंध का अध्ययन,** इन्डियन साइकोलोजिकल रिब्यू स्पेशल इसू अवस 74

जगदीश (2009): **माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन,** इन्डियन साइकोलोजिकल रिब्यू स्पेशल इसू vol 74

पण्डेय, रामशकल (2007): **शिक्षा मनोविज्ञान**, आर लाल बुक डिपो मेरठ।